वायरस के संग जीना

डॉ मधुमिता दोबे

परिचय

हमें वायरसों (विषाणु) के साथ रहते हुए अब तक लाखों साल हो चुके हैं। इतिहास महामारियों और वैश्विक महामारियों का हिसाब रखता है जिसकी वजह से हमें यह पता है कि विषाणुजनित महामारियों (वायरसों के कारण पैदा हुई संक्रामक बीमारियों के प्रकोप, जो तेज़ी से फैले और जिनके कारण एक ही वक़्त में किसी समुदाय में कई लोग प्रभावित हुए) की शुरुआत लगभग 12 हज़ार वर्ष पहले नवपाषाण युग के दौरान हुई, जब मनुष्यों ने खेतिहर समुदायों की घनी आबादियाँ विकसित कर ली थीं जिनकी वजह से वायरसों को तेज़ी से फैलने का मौक़ा मिला। कई मर्तबा यह वायरस कई देशों या महाद्वीपों में फैल गए और इन्हें वैश्विक महामारी (pandemic) के रूप में जाना गया। इस तरह का सबसे हालिया उदाहरण सार्स-कोवी-2 महामारी है जिसने पिछले दो सालों में दुनिया को तहस-नहस कर दिया है।

जैसे-जैसे इन वायरसों के बारे में जानकारी बढ़ी (ख़ासतौर पर हाल के समय में इबोला, सार्स, मर्स और निपाह जैसे वायरसों के कारण हुई वैश्विक महामारियों के पनपने और फैलने के साथ) वैसे-वैसे हाथ की स्वच्छता, भोजन की स्वच्छता, मास्क पहनने और दूरी बनाए रखने जैसे एहतियाती व्यवहारों की महत्ता पर भी ज़ोर दिया गया। हालाँकि, जब चीन के वूहान शहर से एक नए कोरोना वायरस की ख़बरें आनी शुरू हुईं तो पूरी दुनिया को एक झटका लगा था और वह इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी। इस नए वायरस को समझने के लिए दुनिया जब तक जाग कर उठती, वह तेज़ी से फैलते हुए बहुत कुछ बरबाद कर चुका था।

स्कूलबन्दी और उसका प्रभाव

जैसे-जैसे महामारी के दिन आगे बढ़ते गए, *कोविड-19* के फैलाव के रोकथाम के लिए प्रतिबन्ध लगाए जाने लगे और ऐसे ही एक क़दम के तहत स्कूल बन्द कर दिए गए। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि साल 2020 में कोरोना वायरस महामारी और उसके परिणामस्वरूप लगने वाले लॉकडाउन के कारण भारत में 15 लाख स्कूलों के बन्द होने से प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में नामांकित 24.7 करोड़ बच्चे प्रभावित हुए। हालाँकि अभी हमारे पास ऐसे पर्याप्त सबूत नहीं हैं जिनसे यह आँका जा सके कि स्कूलबन्दी से बीमारी के संक्रमण के ख़तरे में कितना फ़र्क़ आया है, लेकिन स्कूलबन्दी के कारण बच्चों की सुरक्षा, सेहत और पढ़ाई पर पड़ रहे विपरीत प्रभावों के प्रमाण लिखित रूप में भलीभाँति मौजूद हैं।

भारत दुनिया के उन चार या पाँच देशों में से एक है जहाँ स्कूल सबसे लम्बे समय के लिए बन्द कर दिए गए। इसके परिणामस्वरूप आने वाले व्यवधानों ने शिक्षा प्रणाली के भीतर ही नहीं, बल्कि बच्चों के जीवन के अन्य पहलुओं में भी पहले से मौजूद असमानताओं को बढ़ावा दिया है। स्कूलबन्दी की बहुत भारी सामाजिक और आर्थिक क़ीमत भी अदा करनी पड़ी और इसका सबसे गम्भीर असर सबसे असुरक्षित व वंचित लड़के-लड़कियों और उनके परिवारों पर नीचे उल्लिखित तरीक़ों से पड़ा :

बाधित होती शिक्षा

कक्षा में होने वाली पढ़ाई में रुकावट आने से बच्चे की सीखने की क्षमता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जब स्कूल बन्द होते हैं तब बच्चे और किशोर इन अवसरों को खो बैठते हैं, विशेषकर सुविधाओं से वंचित विद्यार्थी जिनके पास स्कूल से बाहर शिक्षा के कम ही अवसर होते हैं।

स्कूलों में मिलने वाली पोषण जैसी अनिवार्य सेवाओं में रुकावटें

कई बच्चे और किशोर पूरी तरह से स्कूलों में दिए जाने वाले ख़ाने पर आश्रित होते हैं। स्कूलों के बन्द हो जाने पर उनके पोषण के साथ भी समझौता होता है। ऐसा देखा गया है कि स्कूल में भोजन की व्यवस्था से बच्चों की संज्ञानात्मक और सीखने की क्षमताओं को बढ़ावा मिलता है। एक बच्चा अपने जीवन के जो साल स्कूल में बिताता है ठीक उसी अवधि में ख़राब पोषण के कुप्रभावों का उस पर सबसे अधिक ख़तरा रहता है। विश्व भर में लगभग 37 करोड़ बच्चों को सुविधा प्रदान करने वाले स्कूलों में इन भोजन कार्यक्रमों के रुकने से ठीक यही हुआ। इस सुविधा से लाभान्वित होने वालों बच्चों की सबसे बड़ी संख्या भारत में है (लगभग 10 करोड़)। इस आपदा के दौरान पोषण से जुड़ी आवश्यक सेवाओं जैसे स्कूल के भोजन कार्यक्रम, आयरन और फ़ोलिक एसिड की अनुपूर्ति (supplementation), कृमिहरण (deworming) और पोषण शिक्षा में 30 प्रतिशत की कमी आई है।

स्कूलबन्दी से वितरण के उन सामान्य माध्यमों में भी बाधा आई है जिनके द्वारा स्कूल में भोजन कार्यक्रम संचालित होते हैं। हालाँकि घर-घर पहुँचाए जाने वाले राशन का उपयोग करने, नक़द हस्तान्तरण या खाने के वाउचरों के टॉप-अप करने के प्रयास किए गए हैं। लेकिन ये समाधान लम्बे समय तक काम आने वाले नहीं हैं। साल 2020 में, विश्व स्तर पर लगभग 37 करोड़ बच्चे स्कूलबन्दी के दौरान स्कूलों में लगभग 39 अरब बार भोजन नहीं कर पाए। ये वे बच्चे हैं जो इस आपदा के पहले स्कूलों के इन भोजन कार्यक्रमों का लाभ उठा रहे थे। भारत में, मध्याह्न भोजन मिलने से बच्चों में कैलोरी के अभाव की स्थिति में 30 प्रतिशत तक कमी देखी गई है।

शिक्षकों के लिए भ्रम और तनाव का विषय

लम्बे समय तक स्कूल बन्द रहने के कारण, सबसे उपयुक्त परिस्थितियों में भी शिक्षकों के लिए अपने विद्यार्थियों से जुड़कर उनके सीखने में सहयोग देना मुश्किल काम रहा है।

माता-पिता पर दबाव

माता-पिता को अक्सर घर पर अपने बच्चों के सीखने में उनकी मदद करने के लिए कहा जाता रहा है। उनमें से अधिकांश को यह कार्य करने में समस्याएँ आती हैं, ख़ास कर वे माता-पिता जिनके पास सीमित शिक्षा और संसाधन हैं। कोई और चारा न होने पर, अक्सर कामकाजी माता-पिता को बच्चों को अकेले छोड़ना पड़ता है। ऐसी स्थिति में बच्चों में नशीली चीज़ों के सेवन जैसी ख़तरनाक आदतों का चलन बढ़ता जा रहा है। वित्तीय रूप से संकटग्रस्त परिवारों में, आर्थिक झटकों ने बच्चों को काम करने और पैसे कमाने के लिए मजबूर कर दिया है। लड़कियों एवं युवा महिलाओं के साथ यौन शोषण और दुराचार जैसी घटनाओं में वृद्धि हुई है। कम उम्र में विवाह और किशोरावस्था में गर्भधारण के क़िस्से बहुत आम हो गए हैं। कुछ कामकाजी माता-पिता को अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए काम छोड़ना पड़ जाता है जिससे उनकी आमदनी में कमी होती है और परिवार पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

समाज से अलगाव

स्कूल, सामाजिक गतिविधि और लोगों के मेल-मिलाप व संवाद करने के स्थान होते हैं। स्कूल बन्द होने से कई बच्चे और किशोर वह सामाजिक सम्पर्क खो बैठे, जो उन्हें केवल स्कूल में मिल पाता था। दुनिया भर के अध्ययनों से पता चला है कि लम्बे समय तक समाज से अलग रहने वाले बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। सामान्य दिनचर्या में रुकावटें आने और दोस्तों से सम्पर्क टूट जाने से बच्चों में तनाव और बेचैनी की शिकायत हो सकती है।

स्कूलों का फिर से खुलना

वायरस के साथ इस लम्बे वक़्त तक रहे आने ने हमें यह एहसास कराया है कि स्कूलों को, सुरक्षित ढंग से और *कोविड-19* को लेकर देश की व्यापक स्वास्थ्य प्रतिक्रिया के अनुरूप रहते हुए फिर से खोलने की ज़रूरत है। इसके लिए विद्यार्थियों, कर्मचारियों, शिक्षकों और उनके परिवारों को सुरक्षित रखने के सभी उचित उपाय अपनाने होंगे। माता-पिता की कुछ वाज़िब चिन्ताएँ हैं और इन पर ध्यान देने के लिए ज़रूरत है कि ग़लतफ़हमियों को दूर किया जाए और विज्ञान को सार्वजनिक विमर्शों का हिस्सा बनाया जाए ताकि लोगों के लिए तथ्यों पर आधारित निर्णय लेना आसान हो सके। लोक स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े तमाम हिस्सेदारों व विशेषज्ञों तथा बच्चों के माता-पिता को साथ आना ज़रूरी है ताकि स्कूलों को सुरक्षित रूप से दोबारा खोला जा सके।

यूनिसेफ, यूनेस्को, यूएनएचसीआर, वर्ल्ड बैंक और विश्व खाद्य कार्यक्रम ने मिलकर स्कूलों को फिर से खोलने के लिए एक वैश्विक रूपरेखा (Global Framework for Reopening Schools) तैयार की है, जिसे भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा भारतीय सन्दर्भ में अपनाया गया है। स्कूलों को पुनः खोलने की रूपरेखा (जून 2020) हमें इस निर्णय प्रक्रिया के बाबत जानकारी प्रदान करती है कि स्कूलों को फिर से कब खोला जा सकता है और यह भी बताती है कि इसकी क्या-क्या तैयारियाँ होनी चाहिए। साथ ही इसकी क्रियान्यवन प्रक्रिया के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करती है। यह ज़रूरी है कि प्रत्येक स्कूल इस रूपरेखा को उसकी अपनी परिस्थितियों (विशेषकर सामुदायिक संक्रमण दरों) के अनुसार लागू करे और बदलती स्थानीय दशाओं के मुताबिक़ ढलने के लिए इसमें निरन्तर रूपान्तरण होते रहने चाहिए। निश्चित रूप से, पहले उन्हीं क्षेत्रों में स्कूलों को फिर से खोला जाना चाहिए जहाँ संक्रमण की दर सबसे कम हो और स्थानीय संक्रमण का भी सबसे कम ख़तरा हो। स्कूलों का खुलना कुछ चरणों में हो सकता है। उदाहरण के लिए, शुरूआत में कक्षाएँ सप्ताह के कुछ दिनों तक सीमित हों या स्कूल केवल कुछ कक्षाओं या स्तरों के लिए ही खुलें।

यह आवश्यक है कि गतिविधियों की योजना बनाने, उनको अमल में लाने और उनकी निगरानी करने के लिए माता-पिता, शिक्षक और स्कूल एक-दूसरे के साथ समन्वित, एकजुट और पूरक ढंग से काम करें और सहयोग करें। इससे यह सुनिश्चित हो पाएगा कि बच्चे स्कूल के अन्दर एवं बाहर, दोनों ही जगहों में सुरक्षित रहें। इस सम्मिलित प्रयास की सबसे पहली शर्त होती है संचार और तालमेल की ऐसी प्रक्रियाओं को मज़बूती देना जिनसे समुदायों और अभिभावकों के साथ स्थानीय स्तर पर बातचीत और जुड़ाव को प्रोत्साहन मिलता है।

स्कूलों को खोलने से पहले की सामूहिक तैयारी

- स्वच्छता से जुड़े कड़े उपायों को सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा के सारे प्रोटोकॉल लागू करना जैसे हाथ धोना, श्वसन सम्बन्धी तहज़ीबें (खाँसते/ छींकते समय नाक या मुँह को ढँकना), मास्क व अन्य सुरक्षा उपकरणों का उपयोग, सफ़ाई से जुड़ी प्रक्रियाएँ और जहाँ भी ख़ाना तैयार किया जाए तो उससे जुड़े सुरक्षित तरीक़े अपनाना। सबसे ज़रूरी एहतियाती व्यवहारों में से एक है हाथ धोना। इसलिए स्कूल खुलने की प्रक्रिया के एक हिस्से के रूप यह ज़रूरी है कि वहाँ पर्याप्त मात्रा में साफ़ और सुरक्षित पानी, साबुन और हाथ धोने के स्थानों की सुलभता को सुनिश्चित किया जाए।
- ऐसे कर्मचारी, शिक्षक और विद्यार्थी जो उम्र या किसी ख़ास चिकित्सीय बीमारी के कारण जोखिम में हों, उनकी सुरक्षा के लिए नीतियों में संशोधन किया जाए। इस प्रक्रिया को और शिक्षकों व अन्य कर्मचारियों के टीकाकरण को प्राथमिकता देने व उसे सुलभ बनाने के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश तैयार किए जाने चाहिए।
- शारीरिक दूरी रखने के उपायों से जुड़े स्पष्ट और समझने में आसान नियम बनाएँ। इन उपायों में बड़े जमाव वाली गतिविधियों पर रोक लगाना, स्कूली दिन की क्रमबद्ध ढंग से शुरुआत व अन्त होना, भोजन के समय का क्रमबद्ध होना, कक्षाओं को कुछ समय के लिए कहीं बाहर या खुले स्थानों में चलाना, कक्षा में संख्या कम करने के लिए स्कूल को पारियों में चलाना आदि शामिल हैं।

  चूँकि छोटे बच्चे कम-से-कम ख़तरे में होते हैं, प्राथमिक विद्यालय सम्भवतः पहले खुलने चाहिए और इसके बाद कक्षा 12-9। हाथ धोने और शारीरिक दूरी रखने का ध्यानपूर्वक पालन कराना ज़रूरी होगा, इसलिए प्रशासनिक कर्मचारियों और शिक्षकों का सतर्क रहना ज़रूरी है। इसके अलावा, सफ़ाई कर्मचारियों को जहाँ तक हो सके, कीटाणुशोधन पर प्रशिक्षित किया जाना और जहाँ तक सम्भव हों, उन्हें व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
- यदि कोई विद्यार्थी या कर्मचारी विद्यालय में उपस्थित होते हुए अस्वस्थ हो जाते हैं तो ऐसी स्थिति में पालन की जाने वाली प्रक्रियाओं के बारे में बिल्कुल स्पष्ट दिशा-निर्देश बनाएँ। इन प्रक्रियाओं में, विद्यार्थी और कर्मचारी के स्वास्थ्य की निगरानी करना, स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ नियमित सम्पर्क करते रहना, आपातकालीन स्थिति में सम्पर्क किए जाने वालों की सूची को अपडेट करना और सभी बीमार विद्यार्थियों और कर्मचारियों का घर पर रहना अनिवार्य करना शामिल हैं।
- उन बच्चों और परिवारों को मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी और मनोसामाजिक मदद प्रदान करना है जो महामारी की निरन्तर बनी अनिश्चितताओं और इससे जुड़े दोषारोपण/ भेदभाव का मुक़ाबला कर रहे हैं।
- स्कूल में मिलने वाले भोजन जैसी आवश्यक सुविधाओं को नियमित और सुरक्षित रूप से पुनः शुरू करना। स्कूल के भोजन कार्यक्रम को सुरक्षित रूप से फिर से शुरू करने के लिए सारे सम्भव उपाय किए जाने चाहिए। इस कार्यक्रम में सुरक्षित रूप से ख़ाना खिलाने के लिए इन बातों की ज़रूरत है — पूरी प्रक्रिया (ख़ाना तैयार करने से लेकर परोसने तक) के दौरान स्वच्छता में सुधार लाना, मानक संचालन प्रक्रियाएँ तय करना, ख़ाना परोसते हुए शारीरिक दूरी रखने को सुनिश्चित करना, इस पूरी प्रक्रिया में शामिल सभी लोगों की क्षमता-निर्माण और प्रशिक्षण में संलग्न होना।

यह अवसर कुछ उपेक्षित मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करने में भी मदद कर सकता है जैसे कि भोजन में सूक्ष्म पोषक तत्वों वाली सामग्री [लौह युक्त सब्जियाँ, अण्डे और सुदृढ़ीकृत खाद्य पदार्थ (fortified food)] शामिल करना एवं उन समाधानों में निवेश करना जो न केवल स्कूली बच्चों की मौजूदा पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ी की भी मदद करेंगे।

स्कूलों के दोबारा खुलने के बाद की सामूहिक कार्रवाई

- सामुदायिक संक्रमण की सम्भावना फिर उठ खड़ी होने की स्थिति में स्कूलों को पुन: बन्द करने और खोलने के निर्णय को लेकर स्पष्ट कलन विधियाँ तैयार की जानी चाहिए।
- व्यवहार में बदलाव को लेकर लगातार हस्तक्षेप बनाए रखना ताकि मास्क के उचित उपयोग, सफाई एवं कीटाणुशोधन क्रियाकलापों की प्रबलता और बारम्बारता में वृद्धि एवं कूड़े के प्रबन्धन की पद्धतियों में सुधार जैसी बातों को प्रोत्साहन मिल सके।
- *कोविड-19* के बारे में स्पष्ट, संक्षिप्त और सटीक जानकारियों के लिए बच्चों के साथ उनके अनुकूल प्रारूप का उपयोग करते हुए बातचीत करना और इस बीमारी को लेकर उनके अन्दर के डर और चिन्ता को दूर करना।

बच्चों का टीकाकरण

बच्चों के *कोविड-19* के टीकाकरण और ख़ासतौर से इसे स्कूलों को फिर से खोलने की एक शर्त बनाने के बारे में बहुत तर्क-वितर्क हुआ है। यदि हम दुनिया के हालात देखें तो पाएँगें कि जून 2021 के अन्त तक लगभग 170 देशों में स्कूल किसी

न किसी स्तर पर चल रहे थे। हालाँकि, दुनिया के किसी भी हिस्से में 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों का टीकाकरण शुरू नहीं किया गया है। वर्तमान में विश्व भर के सबूतों से पता चलता है कि स्कूलों के खोलने के लिए बच्चों के टीकाकरण जैसी कोई शर्त नहीं होनी चाहिए।

भारत में, अब तक की कुछ अप्रमाणित धारणाओं के आधार पर बच्चों के टीकाकरण पर ज़ोर दिया जा रहा है। ऐसी ही एक धारणा है कि चूँकि वयस्कों को तो टीका लगाया जा रहा है इसलिए केवल टीकारहित बच्चों पर इस बीमारी के गम्भीर रूप से ग्रसित होने का जोखिम रह जाता है। भारत के राज्यों से प्राप्त आँकड़े, जिनमें नवीनतम राष्ट्रीय सीरो-सर्वेक्षण के आँकड़े भी शामिल हैं, यह दिखाते हैं कि बच्चों में *कोविड-19* का संक्रमण वयस्कों जितना ही या उससे भी अधिक रफ़्तार से हुआ है। लेकिन अधिकांशतः बच्चों में कोई लक्षण दिखाई नहीं दिए और बड़ों की तुलना में उनमें बीमारी के गम्भीर स्थिति में पहुँचने की दर भी बहुत कम रही। बच्चों में बीमारी के गम्भीर होने का ख़तरा सबसे कम है और उनमें से 60 से 80 प्रतिशत (भारत में) ने पहले ही अपने शरीर में एंटीबॉडी विकसित कर ली हैं।

वयस्कों के टीकाकरण का उद्देश्य गम्भीर मामलों के अस्पतालों में पहुँचने की स्थिति को और मौतों को कम करना है। इससे अलग बच्चों के टीकाकरण का उद्देश्य बीमारी के संचरण को कम करना है। माता-पिता और परिवारों की आम चिन्ताओं को दूर करने, अफ़वाहों को दूर करने एवं बच्चों के *कोविड-19* टीकाकरण को लेकर वैज्ञानिक जानकारी सामने रखने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। और ज़्यादा प्रमाणों के सामने आने पर यह हो सकता है कि छह महीने से लेकर 17 साल की आयु वर्ग में आने वाले ऐसे बच्चों के लिए, जिनकी ज़्यादा ख़तरे में आने की आशंका हो, उनकी उपलब्धता के हिसाब से, संचरण को कम करने के लिए प्रमाणित हो चुके किसी टीके या फिर एक ख़ुराक वाले किसी टीके की अनुशंसा की जाएगी। हालाँकि सभी बच्चों के लिए ऐसी अनुशंसा नहीं की जाएगी।

बच्चों के स्वस्थ भविष्य की ओर

कोविड-19 वायरस के संचरण को रोकने और धीमा करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि इस वायरस, इसके कारण होने वाली बीमारी और इसके संक्रमण के बारे में ज़्यादा-से-ज़्यादा जानकारी प्राप्त करना। इन वायरसों की प्रकृति और विस्तार को खोलकर रखना आसान काम नहीं था। लेकिन, अब हम जानते हैं कि अन्य वायरसों की तरह यह वायरस भी मुख्य रूप से किसी संक्रमित व्यक्ति के खाँसते या छींकते वक़्त बाहर निकली लार की बूँदों या नाक से होने वाले बहाव के माध्यम से फैलता है। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि विद्यार्थी, शिक्षक और कर्मचारी उचित एहतियाती व्यवहारों का पालन करें जैसे ठीक ढंग से मास्क पहनना, हाथ धोने का अभ्यास करना और स्कूल परिसर के अन्दर और बाहर दोनों जगह शारीरिक दूरी बनाए रखना।

काफ़ी प्रमाणों से पता चलता है कि स्कूलों के खुलने से हमारे बच्चों के लिए अलग से कोई जोखिम खड़ा नहीं होता है। अपने बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा की हमारी कोशिश में यह न हो कि हम उन्हें गुणवत्तापूर्ण ज्ञानार्जन से वंचित कर दें, क्योंकि ऐसा सीखना उनके स्कूल में उपस्थित होने पर ही सम्भव हो सकता है। इसलिए, वायरस के साथ रहना सीखते हुए, हमें समझ, विश्वास और सभी हितधारकों की भागीदारी के तीन सिद्धान्तों के आधार पर एवं उपयुक्त एहतियाती उपायों के साथ स्कूलों को फिर से खोलने का काम प्राथमिकता के साथ करना चाहिए। इन हितधारकों में माता-पिता, शिक्षक, स्कूल के कर्ता-धर्ता, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा प्रदाता और अन्य सम्बन्धित निर्णयकर्ता शामिल हैं। यह आवश्यक है कि स्कूल ऐसे सुरक्षित स्थान हों जहाँ बच्चे एक स्वस्थ भविष्य की ओर बढ़ने की ख़ातिर अपना बेहतरीन विकास करने के लिए लौट सकें।

References

IASC. *Guidance on COVID-19 Prevention and Control in Schools*; https://www.unicef.org/reports/key-messages-and-actions-coronavirus-disease-covid-19-prevention-and-control-schools. Accessed on 2.8.21

Jones, Kate E et al., February 2008. *Global trends in emerging infectious diseases.* Nature. 451 (7181): 990–993. Accessed on 1.8.21

Lahariya C. August 2021. *To reopen schools, we don't have to wait for kids to get vaccinated*. Voices, India, TOI https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/voices. Accessed on 2.8.21

McMichael AJ. 2004. *Environmental and social influences on emerging infectious diseases: past, present and future.* Philosophical Transactions of the Royal Society B. 359 (1447): 1049–1058. Accessed on 2.8.21

United Nations. April 2020. *Policy Brief: The Impact of COVID-19 on children*. UNSDG. https://unsdg.un.org › resources › policy-brief-impact. Accessed on 1.8.21

UNESCO. *Adverse consequences of school closures*. https://en.unesco.org/covid19/educationresponse/consequences

UNESCO, UNICEF, WB, WFP. April 2020. *Framework for re-opening schools*. https://www.sdg4education2030.org/framework-reopening-schools-unesco-unicef-wb-wfp-april-2020. Accessed on 2.8.21

UNICEF. Jan 2021. *COVID-19: Missing More Than a Classroom. The impact of school closures on children's nutrition.* Office of Research - Innocenti Working Paper WP-2021-01. Accessed on 4.8.21

World Bank. 7 May 2020. *The COVID-10 Pandemic: Shocks to Education and Policy Responses.* https://www.worldbank.org/en/topic/education/publication/the-covid19-pandemic-shocks-to-education-and-policy-responses. Accessed on 2.8.21

World Health Organization. *Reducing transmission of pandemic (H1N1) 2009 in school settings.* https://www.who.int/csr/resources/publications/reducing_transmission_h1n1_2009.pdf, Accessed on 2.8.21

डॉ मधुमिता दोबे, एमबीबीएस, डीसीएच, एमडी, एमसीएच, वर्तमान में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के कोलकाता स्थित अखिल भारतीय स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान (एआईआई एंड पीएच) के स्वास्थ्य सम्वर्धन और शिक्षा विभाग में बतौर निदेशक-प्राध्यापक (सार्वजनिक स्वास्थ्य) कार्यरत हैं। वे वर्तमान में, एआईआईएच एंड पीएच, भारतीय चिकित्सा अनुसन्धान परिषद (आईसीएमआर) और विभिन्न अन्य राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा चलाए जाने वाले स्नातकोत्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए शिक्षण व अनुसन्धान गतिविधियों में शामिल हैं। वे कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य संगठनों की बोर्ड सदस्य हैं। चिकित्सा पत्रिकाओं व पुस्तकों में उनके 100 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं। उनसे madhumitadobe@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** प्रज्ञा चौधरी